स्त्रीत्व एवं मातृत्व से जूझती शकुन

* डॉ0 प्रिया

सदियों से यह अवधारणा भारतीय समाज में विद्यमान है कि स्त्री पुरुष जीवन रुपी गाड़ी के दो पहिये हैं। किसी के भी अभाव में यह जीवन रुपी गाड़ी आगे नही बढ़ सकती है। सृष्टि की इसी अनुपम कृति के रुप में स्त्री–पुरुष का निर्माण हुआ तथा इन्हीं स्त्री–पुरुष के परस्पर सम्बन्ध से समाज का उद्‌भव एवं विकास हुआ।

पुरातन काल में स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक थे। वे न सिर्फ परस्पर प्रेम करते थे बल्कि एक दूसरे का सम्मान भी करते थे। शारीरिक बनावट एवं गर्भधारण क्षमता ने स्त्री को न सिर्फ कमजोर व दुर्बल बनाया बल्कि उसके मानसिक एवं शारीरिक शोषण का कारण बनी। जो मातृत्व उसके लिए वरदान था वह उसके जीवन का अभिशाप बन गया। स्त्री के इसी मातृत्व का फायदा पुरुषों द्वारा उठाया गया और पुरुष सत्तात्मक समाज का निर्माण हो गया। जो स्त्री पुरुष की जीवन संगिनी थी, वह उसके इशारे पर नाचने वाली कठपुतली बन कर रह गयी। वस्तु और भोग्या के रुप में पहचानी जाने वाली स्त्री समाज का अभिन्न अंग होते हुए भी अपनी वास्तविक पहचान खो बैठी।

समाज में अपनी वास्तविक पहचान को पुनः प्राप्त करने के लिए उसे न सिर्फ पुरुष से संघर्ष करना था, बल्कि पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था (पुरुष एवं स्त्री) से। स्त्री ने पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती दी और स्व की पहचान तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ दिया। स्त्री–अस्मिता के इस संघर्ष में उसे कुलटा और कुलच्छिनी आदि उपाधियों से विभूषित किया गया। प्रेमचन्द जैसे प्रगतिशील लेखक भी स्त्री के आधुनिक रुप को स्वीकार नहीं कर पाते है ''स्त्री में जब पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।''[1]

एक स्त्री होने के नाते महादेवी इस पीड़ा को भली भाँति पहचानती

* 194 कस्बा सुल्तानपुरए के0एन0आई0टी0ए सुल्तानपुर, उ0प्र0

हैं। इनकी यह पीड़ा अधोलिखित पंक्तियों में अभिव्यक्त होती है– ''हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुत्व चाहिए, न किसी पर प्रभुता। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नही बन सकेगीं।''[2]

परिवर्तन की इस गतिशीलता ने स्त्री को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की और वह स्वावलम्बी बनी। स्वावलम्बी स्त्री में अस्मिता तथा अस्तित्व सम्पन्न का गौरव भाव भी जाग्रत हुआ, जिसे पति–पुरुष सहन नहीं कर सका। परिणाम गृह–कला व पारिवारिक विघटन के रुप में सामने आया। स्त्री अब 'स्त्री–मुक्ति' और 'स्त्री–अस्मिता' के लिए नये सरोकारो से जूझने लगी। उसकी अस्मिता व मुक्ति सामाजिक–पारिवारिक विकास के परिप्रेक्ष्य में बाधक सिद्व होने लगी। स्त्री की इसी विकराल समस्या को सन् 1971 में प्रकाशित मन्नू भण्ड़ारी द्वारा लिखा गया उपन्यास 'आपका बंटी' प्रस्तुत करता है। औपन्यासिक विषय–वस्तु, स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, तलाक और तलाक के बाद माता–पिता के संयुक्त प्यार और जिम्मेदारी से वंचित संतान की करूण चीत्कार है।

मन्नू भण्ड़ारी के इस उपन्यास के सन्दर्भ में डॉ0 राम विनोद सिंह लिखते है– '' 'आपका बंटी' उपन्यास मन्नू भण्ड़ारी की पहली स्वतंत्र औपन्यासिक कृति है जिसमें नारी जीवन से सम्बद्व दाम्पत्य, तलाक, मातृत्व, अकेलेपन से उत्पन्न उलझनों को सफलता के साथ व्यक्त किया गया है लेकिन इसे केवल दाम्पत्य जीवन के बिखराव या नारी के अहं की समस्या या आधुनिक बोध से प्रभावित नारी के मानसिक संघर्ष की रचना कहना समाचीन नहीं है। यह तो आधुनिक भाव बोध की जटिलता और सामाजिक जीवन में व्याप्त विघटनात्मक प्रवृत्ति की उपज है।''[3]

'आपका बंटी' की नायिका शकुन अपने पति अजय द्वारा प्राप्त परित्यक्ता का जीवन जीने के लिए विवश है। आर्थिक रुप से सुदृढ़ होने के साथ शकुन आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है। शकुन अन्य भारतीय नारियों की भाँति न तो अपनी स्थिति पर अफसोस करती है

और न तो इसे अपनी नियति मानती है। वह अजय के बगैर भी अपने जीवन को नयी दिशा में ले जाने के लिए प्रयत्नशील है।

उपन्यास के प्रारम्भ में वह मातृत्व से घिरी रहती है और उसके जीवन का केन्द्र बिन्दु 'बंटी' रहता है। वही बंटी, जो शकुन और अजय के वैवाहिक जीवन की उपलब्धि भी है और शकुन के जीवन की धुरी भी। शकुन भारतीय माँ की तरह बंटी को तरह–तरह की कहानियां सुनाती है ऐसे राजकुमारो की, जो अपनी माँ से बेहद प्यार करते हैं। वह स्वयं को आश्वस्त करने के लिए लाड में बंटी से प्रश्न भी करती है– ''अच्छा, बता तू मेरे लिए इतना सब करेगा, बड़ा होकर या कि निकाल बाहर करेगा..... हटाओ बुढ़िया को बोर करती है।''[4] बंटी द्वारा सकारात्मक उत्तर पाकर शकुन भाव–विभोर हो जाती है, दस वर्षो से अलग रह रही शकुन के लिए बंटी ऐसा सेतु था जो उसे और अजय को जोड़ने का कार्य करता था। मन के किसी कोने में अजय से जुड़ने की आशा शकुन रखती थी– ''न चाहते हुए भी आशा की एक हल्की सी किरण मन में कौंधी थी। कौन जाने बंटी ही.....चाचा ने बंटी के लिए खिलौने दिये तो जाने क्यों लगा था कि ये मात्र बंटी के लिए ही नहीं हैं। बंटी को माध्यम बनाकर उस तक भी कुछ भेजा गया है। उसके बाद अजय स्वयं आया था हमेशा की तरह अलग ही ठहरा, अलग ही रहा और केवल बंटी को ही बुलवाया। उससे तो मुलाकात तक नहीं की फिर भी शकुन को लगता रहा था कि न मिलकर भी अजय जैसे कहीं उससे जुड़ गया है। उस दिन अजय के पास से लौटने पर वह बड़ी देर तक बंटी को दुलारती पुचकारती रही थी मानो बंटी वहाँ से अकेला नही लौटा हो, अपने साथ अजय को भी ले आया हो।''[6]

वकील चाचा द्वारा तलाक का जो प्रस्ताव शकुन के सामने आया। उसने न सिर्फ शकुन को झकझोर दिया, बल्कि उसके और अजय के वैवाहिक सम्बन्ध के रेशे–रेशे उधेड़ने के लिए विवश कर दिया– ''अजय के किसी के साथ सम्बन्ध बढ़ने की सूचना और फिर उसके साथ सैटल हो जाने की सूचना ने उसे कितना तिलमिला दिया था। अकेले रहने के बावजूद तब एक बार फिर नए सिरे से अकेलेपन का भाव जागा था, बहुत

तीखा और कटु होकर। अपमान की भावना ने उस दंश को बहुत ज्यादा बढ़ा दिया था।''[7]

अजय से सम्बन्ध विच्छेद हो जाने के बाद भी, शकुन सामान्य स्त्री की भाँति अजय का सम्बन्ध अन्य स्त्री (मीरा) से स्वीकार नहीं कर पाती। पति अजय का अन्य स्त्री के साथ बढ़ रहा सम्बन्ध उसे कचोटता है– ''अजय से कुछ न पा सकने का दंश यह नहीं है, बल्कि दंश शायद इस बात का हैं कि किसी और ने अजय से वह सब कुछ क्यों पाया, जो उसका प्राप्य था।''[8]

आर्थिक स्वातंत्र्य होने के कारण शकुन स्वयं को पुरुष सत्तात्मक समाज की मानसिकता से मुक्त रखना चाहती है जो उसके अन्दर त्यागमयी पत्नी को मारकर अहंवादी स्त्री को जन्म देती है शकुन की अहंवादी प्रवृत्ति ही अजय की पुरुष मानसिकता को चोट पहुँचाती और दोनों के सम्बन्धों को विश्रृंखलित कर देती है।

डॉ0 पारूकान्त देसाई ने मन्नू भण्डारी के उपरोक्त विचार का समर्थन निम्नलिखित शब्दों में किया है– ''स्त्री जहाँ पद या योग्यता में पुरुष के समक्ष या उत्तम स्थिति में होती है वहाँ पुरुष की अहंवृत्ति उसे झेल नहीं पाती क्योंकि सहस्त्राधिक वर्षों से पुरुष–सत्तात्मक समाज की मानसिकता स्त्री की तेजस्विता को सहजतया अंगीकृत नहीं कर सकती।''[9]

पति अजय से सम्बन्ध विच्छेद शकुन को पत्नीत्व से तो वंचित कर देता है, किन्तु मातृत्व से मुक्त नहीं कर पाता–''बंटी उसके अधिकार की सीमा है, जिसमें वह किसी को नहीं आने देगी।''[10]

वकील चाचा द्वारा बंटी को हॉस्टल भेजने के प्रस्ताव पर वह एकदम से बौखला जाती है और खीझ कर कहती है– **''सात साल से मैं अकेली ही तो बंटी को पाल रही हूँ। उसका हित–अहित मैं दूसरों से ज्यादा जानती हूँ।''**[11]

शकुन के जीवन में बंटी की भूमिका का मूल्यांकन करते हुए वकील चाचा का अधोलिखित कथन शकुन को साजिश का हिस्सा लगता है– ''और इस स्थिति की दो परिणतियाँ हो सकती.....होगीं। या तो तुम

उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करके उस पर हावी होने की कोशिश करोगी और या फिर अपने को बहुत उपेक्षित और अपमानित महसूस करोगी। उस समय तुम्हें यही लगेगा कि जिसके पीछे तुमने अपनी सारी जिन्दगी बरबाद की, वह अब तुम्हें ही–भूलकर अपनी जिन्दगीं जीने की बात सोच रहा है। उस समय तुम्हें बुरा लगेगा। आज अजय को लेकर तुम्हारे मन में जो कटुता है, हो सकता है कि वही फिर बंटी को लेकर हो.....और आज से दस गुना ज्यादा हो।''[12]

वकील आधुनिक विचारों से सम्पृक्त व्यक्ति जो जीवन को परम्पराओं और रीति–रिवाजो से मुक्त मानता है। उनका विचार है कि यदि अजय पुरुष होकर अन्य स्त्री से विवाह करके अपना जीवन सुचारु ढंग से चला सकता है तो शकुन भी किसी अन्य पुरुष से विवाह करके अपने जीवन को सुखमय बनाने का अधिकार रखती है। यदि बंटी के रहने पर अजय को वैवाहिक जीवन की शुरुआत करने में कोई समस्या नहीं है तो शकुन को भी अपने जीवन की नयी शुरुआत करने में मातृत्व या बंटी को बाधा नहीं बनने देना चाहिए। वकील चाचा के उपरोक्त विचार न सिर्फ शकुन को उसके स्त्रीत्व का बोध कराते हैं बल्कि जीवन के प्रति सकारात्मक निर्णय लेने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। शकुन तय करती है कि– ''अजय को उसे दिखा ही देना है कि वह अगर एक नई जिन्दगी की शुरुआत कर सकता है तो वह भी कर सकती है। नहीं, उसे किसी को कुछ नही दिखाना है। जो कुछ भी करना है, अपने लिए करना है।''[13]

शकुन के जीवन में डॉ0 जोशी का प्रवेश बंटी को बेचैन व आक्रोशित कर देता है। बंटी का एबनार्मल व्यवहार शकुन को व्यथित करता है और अन्ततः वह निर्णय लेती है– ''बंटी उसके और अजय के बीच सेतु नहीं बन सका तो; वह उसे अपने और डॉक्टर के बीच में बाधा भी नहीं बनने देगी।''[14]

शकुन डॉ0 जोशी से विवाह करके स्वयं को पूर्ण पाती है। अब उसके पास सब कुछ है। पति के रुप में प्रेम करने वाले डॉ0 जोशी और मातृत्व को पूर्णता देने वाले तीन बच्चे–बंटी, अमि और जोत। शकुन की इस

पूर्णता को बंटी आत्मसात नहीं कर पाता। वह अपनी मम्मी के प्यार को औरों के साथ बाँट नहीं पाता और भय, क्रोध एवं अपराध बोध जैसे मनोभावों का शिकार हो जाता है।

अजय द्वारा बंटी को कलकत्ता ले जाने का प्रस्ताव पहले शकुन को व्यथित करता है–''वहाँ जाकर ही इसे कौन परिचित मिल जायेगा?कहने भर को तुम चाहे इसके पापा हो पर कितना जानते हो तुम इसे, और कितना जानता है यह तुम्हे? तुम इसके कपड़ो को देखो तो पहचान सकते हो?जानते हो इसके कितने नम्बर का जूता आता है।''[15] किन्तु अगले ही क्षण वह तय करती है और अजय से कहती है– ''मैं खुद अब यही चाहने लगी थी इसे तुम्हारे पास ही भेज दूँ। अब कम से कम मैं अपनी जिन्दगी जिऊँ।''[16]

शकुन के अन्दर मातृत्व और स्त्रीत्व स्पष्ट अन्तर्द्वन्द्वबंटी का अजय के साथ कलकत्ता के राजी हो जाने पर दिखाई देता है। वह अनुभव करती है– 'चारो' ओर बिखरा वैभव जैसे एक बिन्दु में सिमट आया। मन में कुछ बुरी तरह सुलगने लगा। मन हुआ कि हाथ पकड़कर बंटी को भीतर ले जाए और कहे कि बैठकर पढ़ो। या एकदम से निकाल दे कि जाओ, अभी जाओ। पर नहीं, वह कुछ नहीं कर सकती। यहाँ आने के बाद से ही वह बंटी पर धीरे–धीरे अधिकार खोती रही है। आज तो चाहकर भी वह कुछ नहीं कह सकती या कि वह कुछ भी क्यो कहें?''[17]

बंटी के कलकत्ता जाते समय शकुन को महसूस हो रहा था– ''एकाएक ही बंटी का टुकर–टुकर देखता हुआ चेहरा आँखों के सामने उभर आया। बिना बोले मुँह फेरे–फेरे ही मानों कह रहा हो– ''मुझे रोक लो मम्मी, मुझे रोक लो। और फिर तो जैसे हजार हजार चेहरे उसके आगे– पीछे घूमने लगे। उसे प्यार करते हुए, उसके गले में बाहे डाले हुए उसकी बगल में लेटे हुए..... नन्हें–नन्हे हाथों से क्यारियाँ खोदते हुए.....।''[18]

अजय के साथ बंटी कलकत्ता चला जाता है किन्तु वहाँ भी वह स्वयं को मीरा, चीनू और अजय के साथ एडजस्ट नहीं कर पाता और समस्यात्मक बच्चे के रुप में सामने आता हैं। अजय और मीरा बंटी को हॉस्टल भेज देते हैं। जहाँ पर बंटी भय से ग्रस्त हो जाता है।

उपन्यास इस अन्त पर आकर समाप्त हो जाता है किन्तु हमारे सामने समस्या उत्पन्न करता है कि बंटी की इस दशा का उत्तरदायी कौन है?शकुन, अजय या दोनों।

बंटी के कलकत्ता चले जाने पर शकुन व्यथित हो जाती है। उसकी यह व्यथा अधोलिखित पंक्तियों में स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है–''एकाएक शकुन फूट फूट कर रो पड़ी। यह आवेग एक या दो दिन का नहीं था कई दिनों का आवेग था। जिसे वह साधे–साधे घूमती थी, कभी भय से तो कभी अपराध से। अब उसे किसी के सामने डरना नहीं है किसी के सामने अपराधी चेहरा लिए नहीं घूमना है। पर मन है कि इस बात से हल्का और आश्वस्त नहीं हो रहा, सिर्फ रो रहा है, बिसूर–बिसूर कर। अपने को कोस रहा है।''[19]

क्या शकुन की यह व्यथा सही है? क्या बंटी की स्थिति की जिम्मेदार सिर्फ शकुन है?क्या अजय को बंटी का यह बर्ताव परेशान नहीं करना चाहिए?

क्यों अजय स्वयं को बंटी का दोषी नहीं पाता और शकुन स्वयं को दोषी पाती है?क्या यह पुरुषवादी मानसिकता के कारण है या स्त्री का मातृत्व उसे पूर्णतः स्त्रीत्व को नहीं प्राप्त करने देता?

शयद हाँ ! स्त्री सदैव मातृत्व और स्त्रीत्व के बीच जूझती रहेगी। कारण शायद यह है कि मातृत्व के अभाव में स्त्री स्वयं को पूर्ण नहीं पाती। यह पुरुषवादी मानसिकता भी कही जा सकती है या ये कहें कि स्त्री स्वयं अपने अस्तित्व को पति एवं बच्चे से ही पूर्ण मानती है, किन्तु पुरुष अपना अस्तित्व पत्नी और बच्चे से भिन्न पाता है। बंटी जैसे बच्चे इस समाज के लिए समस्या है किन्तु इसका उत्तरदायी सिर्फ आधुनिक स्त्री नहीं बल्कि काफी हद तक पुरुष है, जो अपने अस्तित्व का मूल्यांकन पत्नी और बच्चे से भिन्न पाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. प्रेमचन्द्र : गोदान, पृ0–116
2. महादेवी वर्मा : श्रृंखला की कड़िया, पृ0.–15

3. डॉ0 राम विनोद सिंह : आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ0–10
4. आपका बंटी : मन्नू भण्ड़ारी पृ0–10
5. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–31
6. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–30
7. आप का बंटी : मन्नू भण्ड़ारी, पृ0– 33
8. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : डॉ0 पारूकान्त देसाई, पृ0–26
9. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–36
10. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–34
11. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–37
12. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी, पृ0–42
13. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी,, पृ0–106
14. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी,, पृ0–179
15. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी,, पृ0–179
16. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी पृ0– 179
17. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी,, पृ0–180
18. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी,, पृ0–181
19. आपका बंटी : मन्नू भण्डारी– पेपर बैंक बीसवॉ संस्करण–2008, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002।
20. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : डॉ0 पारूकान्त देसाई– चिंतन प्रकाशन नौबस्ता, कानपुर
21. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास : डॉ0 राम विनोद सिह–शोध साहित्य प्रकाशन 577, शाहगंज, इलाहाबाद
22. गोदान : प्रेमचन्द्र–पेपर बैक संस्करण : 2008, वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, नयी दिल्ली–110002
23. श्रृंखला की कड़िया : महादेवी वर्मा– लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद